शांत जन-आंदोलन

से

व्यवस्था परिवर्तन

(भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के शुद्धिकरण का व्यापक विश्लेषण)

शांत जन-आंदोलन
से
व्यवस्था परिवर्तन

(भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के शुद्धिकरण का व्यापक विश्लेषण)

● गणेश पुरोहित

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...

335, देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250110

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक की अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : 978-81-946288-1-1

सर्वाधिकार © : गणेश पुरोहित
मंगलम कार बाजार, की गली
भंडारी बावरी, लाल बाग, नाथद्वारा
राजस्थान, जिला राजसमंद

मूल्य : ₹ 185/-

प्रथम संस्करण : जून, 2020

प्रकाशक : समदर्शी प्रकाशन,
335, देवनगर, मोदीपुरम
मेरठ, उत्तर प्रदेश-250110
मोबाइल नंः 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण : समदर्शी

मुद्रक : थॉमसन प्रेस

Shant Janandolan se Vyavasthaa Parivartan written By- Ganesh Purohit Rs. 185/-

समर्पित है-
उन्हें, जो-
हाड़ कम्पाने वाली सर्द हवाएं सहते हुए
निर्जन बर्फिली पहाड़ियों पर
और-
लू के गर्म थपेड़े सहते हुए
ंजलते रेगिस्तान में खड़े रहते हैं
ताकि हम सुकून जी सके

अनुक्रम

दो शब्द	9
व्यवस्था परिवर्तन क्यों ?	13
'ठंडी क्रांति'	27
बीसवीं सदी की दो सफल क्रान्तियाँ ठंडी क्रांति के लिए बनेंगी प्रेरणा	38
जनआंदोलन का स्वरूप	51
जनजागृति मंच	59
समानान्तर शासन व्यवस्था	78
ग्रामीण भारत में समानान्तर शासन व्यवस्था का प्रयोग	91
शहरी भारत में समानान्तर शासन व्यवस्था का प्रयोग	107
जनसंसद	114
प्रादेशिक जनसंसद	118
केन्द्रीय जनसंसद	131
उपसंहार	144

दो शब्द

भारत में करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं, हिन्दी पढ़ते हैं, किन्तु मान्यता अंग्रेजी लेखकों की अधिक है, क्योंकि सर्वमान्य हिन्दी अब भी कर्पण है। वे नये लेखक और नये विचार उपेक्षित ही रहते हैं, जो हिन्दी में अभिव्यक्त किये जाते हैं। हिन्दी पाठकों के प्रोत्साहन से यदि यह पुस्तक अधिकाधिक लोगों के हाथों में पहुँचती है, तो निश्चय ही व्यवस्था परिवर्तन का एक विचार करोड़ों भारतीयों को उद्वेलित करने में समर्थ होगा। एक नये युग की शुरुआत होगी।

स्याही से बने अक्षर या ज़बान से निकले शब्द उत्प्रेरक बन कर यदि दूसरे मस्तिष्क में प्रवेश कर खलबली मचाने में समर्थ होते हैं तो निश्चय ही उन अक्षरों और शब्दों में कोई सार्थक विचार छुपा हुआ है। ऐसे अक्षर और शब्द विचारक्रांति प्रज्जवलित करने में ईधन का काम करते हैं। विचार क्रांति- विध्वंस नहीं, सृजन करती है। नई सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए मील का पत्थर साबित होती हैं। विचार यदि निर्मल और सत्यनिष्ठ है तो इससे सदैव सुखद परिणाम ही प्राप्त होते हैं।

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की विकृतियाँ और विद्रुपताएँ करोड़ों नागरिकों को दुःख और तकलीफें बांट रही हैं, जिससे मुक्ति के लिए व्यवस्था परिवर्तन का सार्थक प्रयास आवश्यक है। किन्तु हमारे समक्ष उलझन यह है कि हम व्यवस्था परिवर्तन कैसे करें? यदि हम व्यवस्था को एक भवन माने, जिसकी दीवारें जर्र-जर्र हो रही है। प्लास्टर उखड़ा हुआ है, खिड़कियाँ टूटी हुई हैं। भवन के प्रत्येक भीतरी कोने से दुर्गन्ध आ रही है। चारों और अनावश्यक शोर सुनाई दे रहा है, जिसे सुन कर यह कयास लगाना मुश्किल हो रहा है कि आख़िर क्या कहा जा रहा है और क्या सुना जा रहा है? हमारे समक्ष इस भवन की हालत ठीक करने के चार विकल्प हैं :-

- भवन को ज्यों का त्यों रहने दें। थोड़ी बहुत मरम्मत कर इसे ठीक करने का

प्रयास करते रहें। छितराई गंदगी हटाने के लिए कभी-कभी थोड़ी बहुत पहल करते रहें। कर्कश शोर को बंद करने के लिए आप भी चीख-चीख कर उन्हें नसीहतें देते रहें।

- व्यवस्था की दुर्दशा पर लम्बे चौड़े व्याख्यान देते रहें। एक दूसरे पर दोष मढ़ते हुए यह साबित करने का प्रयास करते रहें कि भवन की ऐसी हालत के लिए कौन जिम्मेदार है।
- आक्रोशित हो कर भवन में आग लगा सब कुछ जला कर राख कर दें।
- नये भवन के निर्माण के लिए कोई उपयुक्त जगह ढूँढ़ें। गम्भीर मंत्रणा के बाद भवन का नक्सा बनायें। सभी के सहयोग से भवन की नींव खोदें। भवन की एक-एक ईंट को सोच समझ कर रखते हुए एक सुंदर नये भवन का निर्माण करें और पुराने भवन का सामान धीरे-धीरे नये भवन में स्थानान्तरित कर दें।

निश्चय ही आपको मेरा चौथा विचार पंसद आया होगा, जो व्यवस्था परिवर्तन के लिए एक सार्थक विचार साबित हो सकता है। यही विचार नये भारत का सपना साकार कर सकता है। आओ, हम सब मिल कर व्यवस्था परिवर्तन के इस सृजनात्मक प्रयास पर आज ही काम करना आरम्भ कर दें। हम सभी भारतीयों के सामूहिक प्रयास से ही भारतीय राजनीति का शुद्धिकरण कर नये भारत के निर्माण का सपना साकार किया जा सकता है।

यहाँ एक बात और स्पष्ट करना आवश्यक हो गया है- व्यवस्था परिवर्तन के लिए किसी विदेशी विचारधारा को आयात करना हमारे लिए आवश्यक नहीं है। समानता का नारा दे कर जो लोग समाज को विध्वंस में धकेल, रक्तरंजित करना चाहते हैं, वे मानवता के दुश्मन है। करोड़ों लोगों का रक्त बहा, जो विचारधारा विदेशों में विफल हो गई, वह भारत में कभी सफल नहीं हो सकती, किन्तु भारत में बैठे हुए छद्म बुद्धिजीवी, जिनकी संख्या नगण्य है, भारत की परिस्थितियों से लाभ उठा कर भारत को लाल रंग में रंगने में वर्षों से लगे हुए हैं। यद्यपि इन लोगों की अख़बारों और टीवी न्यूज चेनलों में गहरी पैठ हैं, किन्तु इनके विचारों से हम सहमत नहीं हो सकते, जो सृजन से नहीं, विध्वंस से व्यवस्था परिवर्तन के लिए प्रयासरत हैं। अपने घृणित उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए इन्हें लोकतांत्रिक व्यवस्था को नष्ट करने में भी कोई संकोच नहीं है।

कुछ समय पूर्व अत्यन्त चालाक और धूर्त व्यक्ति भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को बदलने का नारा लगाते हुए सड़कों पर आ गये और अपने जनआंदोलन की ऊर्जा से राजनीतिक दल खड़ा कर एक प्रदेश की सत्ता पर काबिज हो गये। सत्ता मिलने के बाद उन्होंने अपना असली रूप दिखाना आरम्भ कर दिया और भ्रष्ट व्यवस्था की सारी गंदगी को अपने शरीर पर लगा, उस व्यवस्था के अंग बन गये, जिसे बदलने

के लिए उन्होंने जनता को भ्रमित किया था। इन लोगों ने हमे नसीहत दी है- जन आंदोलन को खड़ा करने के पहले ऐसे छलिया लोगों से हमें सावधान रहना है। भविष्य में हमें दुर्जनों को नहीं, तपस्वियों को राजनीतिक व्यवस्था में स्थापित करना है। बहुत सोच समझ कर, सभी को आपस में जोड़ कर, व्यवस्था परिवर्तन के एक कठिन कार्य को पूरा करने का संकल्प लेना है। आक्रोश अभिव्यक्ति से नहीं, परस्पर सहयोग, समन्वय से हम अपने इतिहास और संस्कृति में भरे हुए विपुल ज्ञान के भंड़ार में से उपयोगी विचार खोज सकते हैं और अपने सृजनात्मक प्रयास को सफल कर सकते हैं।

हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि वे खल-पात्र कौन है, जिन्होंने हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को भ्रष्ट व्यवस्था में बदल कर करोड़ों नागरिकों को गरीबी और अभावों के अंधेरे में धकेल दिया? रुग्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था का उपचार करने के पहले इसकी तह में पहुँचना आवश्यक हैं। रुग्णावस्था के कारणों की सम्पूर्ण रिपोर्ट आने के बाद ही उसका आसानी से उपचार करना सम्भव होगा।

पुस्तक में रुग्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था के उपचार की विधि का वर्णन है। इस विधि से रुग्ण लोकतंत्र को स्वस्थ और सबल बनाया जायेगा, ताकि वह भ्रष्टतंत्र से संघर्ष करने का आत्मबल जुटा सके। यदि हमारा लोकतंत्र, भ्रष्टतंत्र को परास्त करने में सक्षम रहा, तो निश्चय ही एक नये युग का आरम्भ होगा। अनिश्चय का अंधेरा छंट जायेगा। एक नया भारत अंगड़ाई ले कर उठेगा। हमारा सपना तभी साकार होगा, जब आप मेरे विचारों को गम्भीरता से लेंगे और इसके साथ अपने विचार जोड़ेंगे।

एक विचार कभी सम्पूर्ण नहीं होता, जब तक कि उसमें संशोधन नहीं किया जाता। इसके आगे और विचार नहीं जोड़े जाते। हमारा दुर्भाग्य यह रहा कि राष्ट्र निर्माण में नागरिकों को सम्मिलित नहीं किया गया। जो कुछ उन पर थोपा जा रहा है, उसकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश भी नहीं की गई। मुट्ठी भर लोग इस देश के लिए नीतियाँ बनाते रहें, लागू करते रहें और नागरिकों को सिर्फ सिर झुका कर उसके दुष्परिणामों को भोगना भर रह गया। यह लोकतंत्र की एक विकृत व्यवस्था है, जिसमें लोक को किनारे कर तंत्र सर्वशक्तिमान बन गया। नया भारत बनाने का हमारा सपना तभी साकार होगा जब राष्ट्र को करोड़ो चिंतक, विचारक और विश्लेषक मिल जायेंगे और उनके विचारों पर सरकारें गम्भीर हो जायेगी।

पुस्तक पढ़ने के बाद अपनी प्रतिक्रिया से मुझे अवश्य अवगत करावें।

–गणेश पुरोहित

+919950722285

व्यवस्था परिवर्तन क्यों ?

जागरुक और संगठित जनशक्ति लोकतंत्र को सशक्त बनाती है, जिससे एक समृद्ध, विकसित और खुशहाल राष्ट्र का सपना साकार होता है। असंगठित, बंटी हुई और भ्रान्तियों में उलझी जनशक्ति लोकतंत्र को निर्बल और निस्तेज बनाती है, जिससे राष्ट्र समस्याग्रस्त और अराजक बन जाता है। नागरिकों को अभावों और निर्धनता की पीड़ा झेलनी पड़ती है।

कागज पर खिंची हुई लकीरों से राष्ट्र नहीं बनता। राष्ट्र भूमि, पहाड़, जंगल, समुद्र और नदी नालों से भी नहीं बनता। राष्ट्र वह आलय है, जिसमें करोड़ों धड़कनों की अनुगूंज सुनाई देती है, जो नागरिकों को एक राष्ट्रीयता की डोर से बांधती है। अनुगूंज में एक रिदम होता है, जिससे माधुर्य झरता है, जो राष्ट्र प्रेम जगाता है। मन में अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण और निष्ठा का भाव उमड़ता है। रिदम के माधुर्य में ही राष्ट्र की प्रगति, विकास और खुशहाली का रहस्य छुपा रहता है, क्योंकि राष्ट्रीयता की डोर जितनी अधिक मजबूत होगी, नागरिकों के बीच कटुता और विचार भिन्नता कम होगी। किन्तु जब रिदम टूट जाती है, तब अलग-अलग स्वरों की प्रतिध्वनियां सुनाई देती हैं। ऐसा होने पर राष्ट्रीयता की डोर ढीली पड़ जाती है। विवाद बढ़ जाते हैं। राष्ट्र एक दुष्चक्र में फंस जाता है। राष्ट्र की प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। जनमानस को अनचाहे कष्ट भोगने पड़ते हैं। ऐसी परिस्थितियों में एक समृद्ध, खुशहाल, विकसित व शक्तिशाली राष्ट्र का सपना साकार नहीं होता।

विड़म्बना यह है कि हमने लोकतांत्रिक शासन प्रणाली तो लागू कर दी, किन्तु राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए समाज को लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरुक और संगठित नहीं किया, वरन् जाति, धर्म और प्रान्तीयता के आधार पर टुकड़ों-टुकड़ों में बांट दिया, जिससे वे व्यक्ति चुनाव जीत कर सत्ता के शीर्ष पर

पहुँचने लगे, जो नागरिकों को आपस में बांटने में निष्णात थे और अपार धन खर्च कर चुनाव जीतने में सक्षम थे। फलतः राजनीति से विचारधारा, सिद्धान्तों और आदर्शों का लोप हो गया। राजनीति छल, कपट, झूठ, प्रपंच और तिकड़म का खेल बन कर रह गयी। सार्वजनिक जीवन से सिद्धान्तवादी, ईमानदार और सेवाभावी नागरिकों का प्रवेश बंद हो गया। धूर्त और अतिचालाक व्यक्ति धन कमाने का उद्धेश्य ले कर राजनीति में प्रवेश करते रहे और सफल होते रहे।

भारत में ही एक खुशहाल, समृद्ध और वैभव की चकाचौंध से चमकता हुआ धनी इंडिया हमारे उन शासकों ने बनाया, जिन्हें हमने लोकतांत्रिक अधिकारों से सत्ता सौंपी। भारत में रहने वाले भारतीयों को दारिद्रय और अभावों की पीड़ा बांट कर आज़ादी के बाद निरन्तर सत्ता सुख भोगते रहे। अपनी कुटिल नीतियों से इंडिया को अमीर बनाते रहे और भारत को गरीब। हम उनकी नीति ओर नीयत को समझते तब तक बहुत देर हो चुकी थी। असामनता की एक गहरी खाई बन चुकी थी। राजनीति में सिद्धान्तों और आदर्शों का पूर्णतया क्षरण होने से राजनीति अब इतनी कलुषित और दूषित हो गई है कि राजनेताओं के रूप में हमें ऐसे खल पात्र नज़र आते हैं, जिन्हें देख कर घिन्न आ जाती है। मन में एक प्रश्न उठता है- क्या ऐसे ही झूठे, प्रपंची, अपने विरोधियों पर शब्दों के कर्कश बाणों से हमले करने वाले लोग ही इस देश पर शासन करने के लिए बचे हैं? क्या लोकतंत्र का यह अर्थ होता है कि सत्ता पाने के लिए चाहे जैसे उल्टे सीधे हथकंड़े अपनाओ? क्या राजनीति अब धूर्तता और तिकड़मकला का ही खेल बन कर रह गई है? ऐसी परिस्थितियां इसलिए बनी, क्योंकि राजनीति अब व्यवसाय के रूप में परणित हो चुकी है। इस व्यवसाय में लोग धन लगाते हैं और धन कमाते हैं। सत्ता मिलने पर न केवल अपार भौतिक सुख सुविधा मिलती है, वरन ज्ञात-अज्ञात स्त्रोतों से इतना धन बरसता है कि आने वाली कई पीढ़ियां तर हो जाती हैं।

राजनीति यानि छलनीति से प्रताड़ित हम करोड़ों अभिशप्त भारतीय, अपना भूत और वर्तमान बिगाड़ कर भविष्य की ओर जाने वाले नाजुक मोड़ पर ठिठक कर खड़े हैं, क्योंकि छलिया लोगों की छल नीति ने हमें एक ऐसी अंधेरी खाई के नज़दीक ला कर छोड़ दिया है, जिसमें यदि फिसल कर गिर गये, तो हमारा भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। आने वाली संतति हमारी इस गम्भीर भूल पर हमें कभी क्षमा नहीं करेगी। अतः जो कुछ राजनीतिक घटनाक्रम घटित हो रहा है, उसे बहुत ध्यान से हमें समझना होगा। उन लोगों को सार्वजनिक जीवन से बाहर करने के लिए एकजुट होना होगा, जो हमारे सामाजिक जीवन को विषाक्त, कष्टपूर्ण और हमे समस्याओं के भंवर में उलझाने के दोषी हैं।

यह अक्षरशः सही है कि राजनीति में धन के घालमेल से लोकतंत्र रुग्ण हो गया

और भ्रष्टतंत्र की ताकत बढ़ती गई। आज हालत यह हो गई है कि लोकतंत्र असाध्य रोगी बन कर मृत्यु शैया पर पड़ा हुआ है और उसके सिरहाने खड़ा दैत्याकार भ्रष्टतंत्र अपने आपको वास्तविक लोकतंत्र घोषित कर रहा है। हमारा दुर्भाग्य यह है कि कालेघोड़े पर बैठे वे राजनेता, जिन्होंने भ्रष्टतंत्र को जन्म दिया, इसे पालपोष कर दैत्याकार स्वरूप दिया, भारतीय राजनीति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। दुखद तथ्य यह है कि भारतीय जनता इनके तिलस्म से मुक्त नहीं हो पा रही है। वे निरन्तर छल से जनता को ठगते जा रहे और मूर्ख बना कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं।

यदि हम भ्रष्टतंत्र को मान्यता दे देंगे तो स्थिति दिन प्रति दिन और अधिक खराब होती जायेगी, हमारी समस्याओं का कभी कोई समाधान नहीं निकलेगा। निश्चय ही हमें रुग्ण लोकतंत्र के उपचार की विधि और औषधि खोजने के लिए एकजुट होना होगा। यदि हमारे सामूहिक प्रयास से लोकतंत्र स्वस्थ और ताकतवर हो गया तो वह भ्रष्टतंत्र से संघर्ष कर उस पर विजय प्राप्त कर सकता है। हमें मालूम है- भ्रष्टतंत्र की जान हमारे राजनेताओं की नाभी में हैं, अतः जब तक हम सार्वजनिक जीवन से भ्रष्ट और पेशेवर लोगों को निष्कासित नहीं करेंगे, भ्रष्टतंत्र पर विजय पाना लगभग असम्भव है। सार्वजनिक जीवन से इनके निष्कासन के बाद ही एक समृद्ध और खुशहाल नये भारत का सपना साकार हो सकता है।

हम सब मिल बैठ कर संवाद करेंगे, चिंतन करेंगे, विचार-विमर्श करेंगे, तो कोई रास्ता निकाल पायेंगे, परन्तु छलिया लोगों की छल नीति में उलझे रहे, तो सिवाय बर्बादी के कुछ भी हांसिल होने वाला नहीं है। लोकतंत्र को जिन्होंने भ्रष्टतंत्र में तब्दील किया, वे हमारे दुख-दर्द के प्रति संवेदनशील नहीं है। वे स्वयं बेईमान है। बेईमानी से उन्होंने अथाह धन एकत्रित किया है, कर रहे हैं और हम उन्हें मान्यता देते रहें, तो भविष्य में भी करते रहेंगे। यह कटु सत्य है कि बेईमानो ने उन लोगों की किस्मत चमकाई, जो उनके बेईमानी के धंधे में साझीदार थे। जबकि इस देश में रह रहे अस्सी प्रतिशत नागरिकों के साथ उन्होंने छलकर उन्हें निर्धन और समस्याग्रस्त नागरिक बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है। हम जानते हैं- इन्होंने देश के संसाधनों और राजकोष को जी भर कर लूटा और हम इनकी बेबाक लूट को खुली आँखों से देखते रहे, पर रोक नहीं पाये, क्योंकि हम संगठित नहीं है। हमें बेईमानो ने धर्म, जाति और प्रान्तीयता की संकीर्णता में बाँट रखा है। जबकि देश के संसाधनों पर कुछ लोगों का नहीं, हम सभी भारतीयों का समान अधिकार है। राजकोष में जो धन जाता है वह हमारा है, हमारी जेब से निकल कर जाता है। हम सरकार चलाने के लिए अपनी गाढ़ी कमाई से राजकोष को भरते हैं, पर हम उन धूर्त, चालाक और गिरे हुए लोगों के काले कारनामों को असहाय हो कर देखते रहते हैं, क्योंकि हम

ही उन्हें शासक बना कर सत्ता सौंपते हैं।

हमारे भ्रष्टतंत्र की प्रमुख उपलब्धि यह रही है कि मुट्ठी भर लोग मालामाल हो गये और करोड़ों भारतीय कंगाल हो गये। कहीं भौतिक सुविधाओं का अम्बार लगा हुआ है तो कहीं अभावों में जीवन गुजारने की यंत्रणा सहनी पड़ रही है। किसी के पास इतना कुछ है कि सम्भाले नहीं सम्भल रहा है, किन्तु अधिकांश के पास कुछ भी नहीं हैं। हर छोटी-मोटी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तरसना उनकी नियति बन गई है। आज हालत यह है कि हमारे लोकतांत्रिक देश में जो जितना बड़ा बेईमान होता है, वही बड़ा धनवान बन जाता है। अवैध और अनैतिक तरीके अपना कर धन कमाने को ये लोग अपना नैतिक अधिकार मानते हैं। पूरी प्रशासनिक व्यवस्था को भ्रष्टाचार के जीवाणुओं ने खोखला कर रखा है। कई सरकारी दफ्तर तो भ्रष्टाचार की फैक्ट्री बना दिये गये हैं, जहाँ बिना संकोच और भय के बेशर्मी से लेन-देन का कारोबार होता है। जनता देती है और वे लेते हैं। दुःखी हो कर हम सिर्फ यही कह पाते हैं-बिना पैसे दिये सरकारी काम हो ही नहीं सकता। प्रश्न उठता है कि क्या यह देश सिर्फ राजनेताओं, भ्रष्ट व्यापारियों, सरकारी कर्मचारियों की मौज मस्ती के लिए ही है? क्या करोड़ों बेबस नागरिकों को इस देश में रहने और जीने का अधिकार नहीं है? क्या वे अभावों में जी कर दुःख भोगने ही आये हैं और भविष्य में भी दुःख भोगते रहेंगे?

भ्रष्ट लोकतांत्रिक व्यवस्था ने इस देश में रह रहे नागरिकों के बीच आर्थिक असमानता की ऐसी खाई बना रखी है, जैसी विश्व में कहीं नहीं है। यह एक कड़वी सच्चाई है कि इस देश की नब्बे प्रतिशत जनता के पास मात्र बीस प्रतिशत सम्पति है- याने सौ रुपये में सिर्फ बीस रुपये। जबकि दस प्रतिशत धनी लोगों के पास कुल सम्पति का अस्सी प्रतिशत हिस्सा आता है- याने सौ में से अस्सीं रुपये। इसमें भी एक प्रतिशत धन कुबेरों के पास पचास प्रतिशत सम्पति है- याने सौ में से पचास रुपये। यह सब भाग्य की विड़म्बना नहीं है। यह हमारे लोकतांत्रिक शासकों की कुत्सित नीतियों के दुष्परिणाम हैं, जिन्हें हम भोग रहे हैं, किन्तु ऊफ तक नहीं कह सकते, क्योंकि इनकी सरकारें हमारे वोटों से ही बनती हैं।

ऐसी दुखद परिस्थितियाँ इसलिए निर्मित हुई, क्योंकि किसी कागज के टुकड़े पर स्याही लगाने या किसी मशीन के बटन पर उँगली रखने को ही हम अपना लोकतांत्रिक अधिकार मानते आ रहे हैं। जबकि हकीकत यह है कि अयोग्य और अत्यधिक निकृष्ट चारित्रिक विशेषताओं वाले लोग हमे सिर्फ सत्ता तक पहुँचने की सीढ़ी ही समझते हैं। क्या कभी आपके मन में यह बात नहीं आई कि हमें लोकतांत्रिक प्रक्रिया के इस खेल का तरीका बदलना चाहिये? धूम धड़ाके वाली चुनाव प्रक्रिया शांत होनी चाहिये। चुनाव जीतने के लिए कालेधन से पैदा किया गया

तिलस्म बंद होना चाहिये। हम उन्हें क्यों बार-बार चुनें, जो हमे धोखा देते रहें हैं? जिन्हें एक बार परख लिया, उनकी नीति ओर नीयत से धोखा खा गये, फिर बार -बार उन्हें मौका देने का क्या औचित्य है? क्या हम मिल कर ऐसा उपाय नहीं कर सकते, जिससे वे सार्वजनिक जीवन से सदा के लिए बाहर निकल जायें?

निश्चय ही ऐसा विचार आपके मन में आया होगा। यह सार्थक विचार है, जिस पर गम्भीर विचार मंथन करने से हमें कोई नई राह मिल सकती है। हम यह नहीं चाहते हैं कि अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं करें। हम मतदान का प्रयोग करें और उन्हें चुने, जो पात्र हो। यदि हमारे समक्ष कोई विकल्प ही नहीं हो तो क्या करें? ऐसा इसलिए है, क्योंकि राजनीतिक दल जिन प्रत्याशियों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करते है, उनमें से ही किसी एक को चुनने की बाध्यता रहती है, चाहे वे सभी अयोग्य हो और हमारी कसौटी पर खरे नहीं उतरते हों। क्या आपके मन में यह विचार भी आता है कि हम ऐसी व्यवस्था बनायें जिससे सार्वजनिक जीवन में वे ही व्यक्ति रहें, जो उपयुक्त हों, श्रेष्ठ हों और जो ईमानदारी से देश को चलाने की पात्रता रखते हों? क्या कभी आपने इस विषय पर भी विचार किया है कि हम उन लोगों को ही अपना जनप्रतिनिधि क्यों चुने, जिन्हें राजनीतिक दल प्रस्तुत करते हैं? लोकतंत्र में जनता की शक्तियाँ राजनीतिक दलों से ज्यादा होती है, जबकि हमारे लोकतंत्र में राजनीतिक दलों और उनको चलाने वाले नेताओं के पास ज्यादा शक्तियाँ हैं, जो हमारी तकलीफों का प्रमुख कारण है।

यदि आपके मन में ऐसे विचार उठते हैं तो निश्चय ही ये व्यवस्था परिवर्तन के प्रति आपकी उत्कंठा को दर्शाते हैं। और यह आवश्यक भी है, क्योंकि अब हमारी सहनशीलता जवाब दे रही है। हमे नया मार्ग खोजने के लिए गम्भीर होना होगा, क्योंकि अधिक दिनों तक बेईमानों की उच्छखृलता बर्दाश्त नहीं की जा सकती। जो लोग जेल के सींखचों के पीछे धकेलने के काबिल हैं , उन्हें सत्ता के शीर्ष पर बिठाना अनुचित है। हमारे पास लोकतांत्रिक अधिकार ही ऐसा हथियार है, जिससे हम उन्हें सार्वजनिक जीवन से निष्कासित कर सकते हैं। ये लोग सार्वजनिक जीवन से निकल कर शक्तिहीन हो जायेंगे तो हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था रोग मुक्त हो जायेगी। भारतीय राजनीति का शुद्धिकरण हो जायेगा।

यह देश हमारा है और हमें अपने देश में सुखपूर्वक जीने का अधिकार है। जो व्यक्ति अपने श्रम से, बौद्धिक कौशल और उद्यम से धनी बनता है, उससे हमें कोई एतराज नहीं है, किन्तु जो व्यक्ति बिना श्रम किये, तिकड़म, छल और भ्रष्ट आचरण से धन कमाता है, उससे हमें एतराज है। हम उन राजनेताओं के विरोधी हैं जो भ्रष्ट व्यवस्था के जन्मदाता और पालनहारा है। हम अवैध और अनैतिक तरीका सें धन कमाने की प्रवृति पर अंकुश लगाना चाहते हैं। हम किसी का धन छीनेंगे नहीं, पर

उस प्रवृति को रोकेंगे, जो धनवान बनने के लिए करोड़ों नागरिकों को गरीबी और अभावों की पीड़ा देती हैं। हमें सुखों का बंटवारा चाहिये। हम यह कब तक बर्दाश्त करते रहेंगे कि किसी के पास पानी के जलाशय भरे हों और कोई बूंद-बूंद के लिए तरसता रहे। किसी के पास इतना हो कि उसकी आने वाली दस पीढ़ियाँ निठल्ली बैठी रह कर बिना कोई काम धंधा किये पेट भर सके। हमें इतना नहीं चाहिये, किन्तु हमें अपने श्रम की इतनी कीमत तो चाहिये, जिससे हमारे भोजन की थाली भरी रहे। हमें रहने के लिए अनेकों भव्य मकान नहीं चाहिये, पर सिर छुपाने के लिए एक अदद छत तो चाहिये। हमें विलासितापूर्ण जीवन शैली नहीं चाहिये, परन्तु जीने के लिए रोजगार तो चाहिये। जब हम अपना पेट काट कर राजकोष भरते हैं, तो हमारे बच्चों के बेहतर भविष्य की माँग रख सकते हैं। क्यों हम अपनी ही चुनी हुई सरकार के समक्ष लाचार और बेचारे बन कर खड़े रहें? क्या हमें आज़ाद भारत में स्वाभिमान से जीने का हक नहीं है?

एक सड़ी गली व्यवस्था को बदलना हमारी विवशता नहीं, आवश्यकता है। पूरी व्यवस्था भीतर से इतनी खोखली हो गई है कि इसे नया रूप देना लगभग असम्भव है। जिन लोगों ने वर्षों से सत्ता सुख भोगते हुए इस व्यवस्था को खोखला किया है, उनकी पहचान कर उनसे सार्वजनिक जीवन में रहने का अधिकार छीनना है। किन्तु हम करोड़ों भारतीय, व्यवस्था परिवर्तन का संकल्प लें तो इस असम्भव को सम्भव किया जा सकता है। व्यवस्था परिवर्तन के गर्भ से ही नये भारत का जन्म होगा। ऐसा भारत जिसमें सुखों का बंटवारा हो जायेगा। सार्वजनिक जीवन में वे ही व्यक्ति रहेंगे, जिनके मन में सेवा का भाव होगा, शासक का नहीं। गरीब इतने गरीब नहीं रहेंगे कि उन्हें भर पेट भोजन ही नहीं मिले और रहने को उनके पास घर ही नहीं हो। हमारा नया भारत ऐसा साफ सुथरा व्यवस्थित नया भारत होगा, जिसमें श्रम की कीमत होगी, भ्रष्ट आचरण की नहीं, सरकारी सेवकों को वेतन से ही संतुष्टि करनी होगी, अतिरिक्त आय के सभी मार्ग बंद कर दिये जायेंगे। बेमानी सम्पति पर गाज गिरेगी और उनके काले धन से सड़कें, स्कूल और अस्पताल बनेंगे। यह तभी सम्भव हो सकता है यदि हम राजनेताओं के भ्रमजाल में नहीं उलझेंगे। उनके सियासी चौसर के मोहरे नहीं बनेंगे। वे हमें बाँटना चाहेंगे, पर हम एकजुट रहेंगे।

वस्तुतः भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था पूरी तरह राजनेताओं और उनके राजनीतिक दलों पर अवलम्बित है। चुनाव वही व्यक्ति जीत सकता है जिसके पास करोड़ों रुपये हों और किसी राजनीतिक पार्टी का सहारा हो। हमारे बीच रहने वाला वह व्यक्ति जिसकी छवि साफ सुथरी है, जिसमें हमें ईमानदारी, निष्ठा व सेवा का भाव दिखाई देता है, वह व्यक्ति राजनीति में सफल नहीं हो सकता। हमारे समक्ष ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं, जो यह साबित करते हैं कि भारत की राजनीति धन और

तिकड़म का खेल है। क्योंकि निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करने के उद्धेश्य से चुनाव में उतरे कई प्रत्याशी अपनी जमानत भी नहीं बचा पाये। यही कारण है कि राजनीति में धनी, दागी और अपराधी छवि वाले व्यक्ति प्रवेश कर सफल हो जाते हैं, क्योंकि जनता के सामने दो तीन राजनीतिक दलों द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रत्याशियों में से किसी एक के पक्ष में मतदान करना रहता है। यह विवशता ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे बड़ी दुर्बलता है। हमें थक हार कर उसी व्यक्ति पर भरोसा करना पड़ता है जो किसी राजनीतिक परिवार का सदस्य है या उस परिवार का कोई विश्वस्त व्यक्ति हैं। अपार धन खर्च करने वाला कोई कारोबारी, अवैध धंधे करने वाला कोई अपराधी या दागी व्यक्ति है।

यदि हमारा लोकतंत्र जीवंत लोकतंत्र होता- अर्थात् जनता जागरुक हो कर मतदान करती, तो ऐसे व्यक्ति राजनीति में सफल नहीं हो पाते। अपराधी वृति के राजनेताओं को शीर्ष पर देखने के बाद हमारे मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि वे क्या कारण है, जिससे वे चुनाव जीत जाते हैं? उनके चुनाव जीतने के कौशल का अध्ययन करना होगा। जनता को जागृत कर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करनी होगी, ताकि वे अपने मकसद में सफल नहीं हो पायें।

यह तभी सम्भव है, जब हम वह तकनीक खोजने में सफल हो सकें, जिससे भारतीय लोकतंत्र को जीवंत लोकतंत्र में तब्दील किया जा सके। ऐसा करने के लिए हमें लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में जनता की भागीदारी बढ़ानी होगी। जैसे-जैसे जनता की भागीदारी बढ़ेगी वैसे-वैसे राजनीति में जमे हुए लोगों की भूमिका सीमित होती जायेगी। यह प्रक्रिया जितनी तेजी से बढ़ेगी, उतनी ही तेजी से नये भारत के निमार्ण की प्रक्रिया भी तेज होगी। किन्तु वह तकनीक एक व्यक्ति नहीं खोज सकता। कोई एक समूह नहीं खोज सकता। एक राजनीतिक दल और उससे जुड़े हुए राजनेता नहीं खोज सकते। यह तकनीक यदि देश के करोड़ों लोग मिल कर खोजेंगे, तभी इसके सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे। ऐसी ही एक तकनीक ले कर मैं आपके पास आया हूँ। सम्भव है मेरी तकनीक से आप सहमत न भी हों, किन्तु आप भी कोई तकनीक देने के लिए प्रयास कर सकते हैं। हमारे सामूहिक प्रयास से हमारे हाथ कोई कारगर तकनीक लग जाय, ऐसा सम्भव हो सकता है।

यदि हम समस्याओं की गहराई में जायें, तो हमें यही आभास होगा कि जन प्रतिनिधि चुनने में हम भारी भूल करते रहें। फलतः हम राज्यों और केन्द्र में वे सरकारें नहीं बना पाये, जो जनता के प्रति पूर्णतया जवाबदेय थीं। जनता को अपनी सरकार बनाने की तकनीक ज्ञात होती तो भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था कुछ लोगों की मुट्ठी में बंद नहीं होती। इस तथ्य की प्रमाणिकता जाँचने के लिए हम यदि उन लोगों के बारें में जानकारी प्राप्त करें, जो निरन्तर सत्ता में रहे या सत्ता प्रतिष्ठान से जुड़े

रहे, तो हकीकत जानकर आँखें चुंधिया जायेंगी। भारत की गरीबी और अभावों पर घडियाली आंसू बहाने वाले अधिकांश राजनेताओं के पास अरबों रुपयों की सम्पति है, जो उन्होंने परिश्रम करके या उद्योग खड़ा करके नहीं बनाई, अपितु व्यवस्था का लाभ उठा कर बनाई है। यदि आप उन बड़े-बड़े शहरों में इनकी सम्पति का आंकलन करेंगे, तो आपको अहसास होगा कि ये लोग सार्वजनिक जीवन में रह कर सिर्फ अपने लिए जीते हैं। क्योंकि यदि वास्तव में जनता के हितैषी होते, जनता के दुःखों से इनके मन में पीड़ा होती, तो ये इतने धनी नहीं होते। निष्कर्ष यह है कि सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने वाले अधिकांश राजनेता देश की समस्याओं से कैसे पार पाया जाय, इस विषय पर चिंतन नहीं करते। जनता के दुःख दर्द से वे न तो जुड़े रहते हैं और न ही इस बारे में संवेदनशील दिखाई देते हैं। अपनी पूरी क्षमता का उपयोग वे देश सेवा में नहीं लगाते। वे निश्चित उद्धेश्य को लेकर सार्वजनिक जीवन में आते हैं और तन्मयता से अपने लक्ष्य को हांसिल करने के लिए पूरी ताकत झोंक देते हैं।

हमारी लोकसभा और विधानसभाओं का स्वरूप उस चुनावी प्रक्रिया से बनता है, जो चुनावों की तिथि घोषित होने, राजनीतिक दलों द्वारा अपने अपने प्रत्याशियों का चयन करने, नामांकन पत्र भरने, प्रचार अभियान को चालू करने, चुनाव जीतने और सरकार बनाने के बाद समाप्त होता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में वे लोग रुचि रखते हैं, जो प्रत्यक्ष और अप्रतयक्ष रूप से भारतीय राजनीति से जुड़े रहते हैं। इन लोगों की संख्या भारत की कुल जनसंख्या का मात्र एक प्रतिशत या उससे भी कम है। अर्थात् मात्र एक-आध प्रतिशत व्यक्ति पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। शेष भारतीय तो केवल अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं और तमाशबीन दर्शक की तरह पूरी प्रक्रिया को देखते रहते हैं। जबकि यह हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिससे हम सभी भारतीय प्रभावित होते हैं। यदि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में जनता की भागीदारी को बढ़ा दिया जाय, तो निश्चित रूप से उन लोगों का प्रभाव कम हो जायेगा, जो वर्षों से राजनीति में जमे हुए हैं, सार्वजनिक जीवन में रहने की पात्रता नहीं रखते, किन्तु भारतीय राजनीति की परिस्थितियों का लाभ उठाने में महारथ रखने के कारण राजनीति में सफल होते रहते हैं।

यदि मतदान प्रक्रिया के प्रारम्भ होने से पहले ही जनता मानसिक रूप से तैयार हो कर यह सुनिश्चित कर ले कि किस व्यक्ति को अपना जन प्रतिनिधि बनाना है और किस राजनीतिक दल को देश या प्रदेश सौंपा जाना आवश्यक है, तो सारी स्थिति बदल जायेगी। ऐसा इसलिए होगा, क्योंकि नागरिकों के मन में जब यह बात गहराई तक बैठ जायेगी कि उन्हें किस व्यक्ति के पक्ष में मतदान करना है और क्यों करना है? यदि यह सम्भव हो पाया, तो निश्चित रूप से भारत की तकदीर बदल जायेगी।

ऐसा होने पर भ्रामक चुनाव प्रचार का असर समाप्त हो जायेगा। राजनीति में न तो पेशेवर कार्यकर्ता रहेंगे और न ही पेशेवर नेता। चुनाव जीतने के लिए धन बहाने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। चुनाव बिना धन खर्च के ही जीते जा सकेंगे। यही वह तकनीक है, जिसका उपयोग कर हम नये भारत के निर्माण का सपना साकार कर सकते हैं। यदि हम एकजुट हो कर इस तकनीक के बारें में गहराई से चिंतन, मनन और मंथन करेंगे हैं तो निश्चित रूप से हमें सफलता मिलेगी और इस तकनीक के वे सूत्र हाथ लग जायेंगे, जो व्यवस्था परिवर्तन के लिए काफी उपयोगी साबित होंगे। निश्चय ही तब हमें भारतीय राजनीति में वास्तविक लोकतंत्र के दर्शन होंगे। अन्यथा मतदान प्रक्रिया चुनाव जीतने की एक खेल प्रतिस्पर्धा बन कर रह जायेगी।

भारत का कोई भी राजनीतिक दल बिना कालेधन का सहारा लिये चुनाव जीत कर सरकार नहीं बना सकता। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में उन लोगों का प्रभाव कम नहीं किया जा सकता, जो राजनेताओं को चुनाव जीतने के लिए धन देते हैं। अतः अब हमारे लिए यह आवश्यक हो गया है कि हम जागरुक नागरिक बन कर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को साफ सुथरा करने की जिम्मेदारी स्वयं लें। हम एक लोकतांत्रिक समाज के अंग हैं। हम जिम्मेदारी ओढ़ने से बचते रहे, इसीलिए हमने उन राजनेताओं के अधीन अपना वर्तमान और भविष्य सुपुर्द कर दिया, जो इसके पात्र नहीं थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद निरन्तर हम सरकारों को आते जाते देखते रहे। चुनावों के पहले राजनीतिक दलों द्वारा एक दूसरे पर दोषारोपण करते देखते रहे। प्रत्येक चुनाव में राजनीतिक दल अपने आपको जनता का बेहतर सेवक बना कर जनता की पूरी प्रतिबद्धता से सेवा करने का वचन देते रहे, परन्तु हमेशा उनकी कथनी और करनी में फर्क दिखाई दिया, किन्तु हम उन्हें जवाबदेय नहीं बना पाये।

किन्तु अब हमें भारतीय लोकतंत्र और लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को गम्भीरता से समझना होगा। क्योंकि लोकतंत्र में तंत्र नहीं लोक महत्वपूर्ण होता है, जिसके अधीन तंत्र रहता है। यदि तंत्र सशक्त और लोक अशक्त हो जाय, तो वह लोकतंत्र, स्वस्थ लोकतंत्र नहीं रहता, रुग्ण लोकतंत्र बन जाता है। हमें भारत की राजनीति से जुड़ कर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना होगा। लोकतांत्रिक सरकारों की कार्यप्रणाली पर गहन दृष्टि रखनी होगी। हमें उन कारणों को खोजना होगा, जिसके कारण हमारे लोकतांत्रिक व्यवस्था में विद्रुपता आई। निरन्तर सत्ता उन लोगों के हाथों में क्यों चली गई, जो वास्तव में सत्ता पाने के हकदार नहीं थे?

किसी विशाल वट वृक्ष की शाखाओं पर प्रहार करने से कुछ पत्तों और कमजोर टहनियों को गिराया जा सकता है, किन्तु वृक्ष को धराशायी करने के लिए उसकी जड़ों को खोदना जरूरी होता है। जन प्रतिनिधि बदलने और एक पार्टी को छोड़

दूसरी पार्टी में विश्वास प्रकट करने से व्यवस्था नहीं बदल सकती। हमें उन कारणों को खोजना होगा, जिसके कारण पूरी राजनीतिक व्यवस्था भ्रष्ट हो गई। हमारे लिए यह भी जानना आवश्यक है कि नागरिकों के बीच असमानता इतनी क्यों बढ़ गई? जब तक विषय की गहराई में नहीं उतरेंगे हम कभी यह समझ नहीं पायेंगे कि यह क्यों हो रहा है? जो लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था में विकृतियां पैदा करने के दोषी हैं, उन्हें क्यों हमने व्यवस्था में स्थापित किया? जबकि हमें मालूम है कि हमारी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पैदा हुई विकृतियों के कारण ही लोकतंत्र के मीठे फल खाने का सौभाग्य अधिकांश नागरिकों को नहीं मिल रहा है। अतः जब तक हम लोकतांत्रिक व्यवस्था की रुग्णता का उपचार नहीं ढूँढ़ पायेंगे, तब तक विशाल वटवृक्ष की टहनियों और पत्तों पर प्रहार करने का ही उपक्रम करते रहेंगे, जिससे कोई परिणाम प्राप्त नहीं होगा।

हम यह नहीं चाहते हैं कि जो परिस्थितियां बनी हैं, उसका कोई समाधान हमारे पास नहीं है। सतत संवाद, आपसी विश्वास और समन्वय से ही हम समाधान खोज सकते हैं। इसके लिए यह जरूरी है कि जो राजनीतिक घटनाक्रम घटित हो रहा है, उस पर एक कड़ी, निष्पक्ष और व्यापक दृष्टि रखी जाय। उन सारे कारणों और परिस्थितियों का गहन अध्ययन किया जाय, जिसके कारण हमारी व्यवस्था में विद्रुपता आई। ऐसा इसलिए जरूरी है, क्योंकि हम एक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के अंग है, इस व्यवस्था को संचालित करने का हमें संविधान ने अधिकार दे रखा है। हमारी व्यवस्था में विकृतियां क्यों पैदा हुई, इसके कारण क्या है और इसके जिम्मेदार कौन लोग है, इसकी हमें जानकारी होना आवश्यक है। जब हमारे पास विस्तृत जानकारी होगी, तब ही हम उसका पूरा विश्लेषण कर आगे की रणनीति बना पायेंगे। हम उन लोगों को सार्वजनिक जीवन से निष्कासित कर पायेंगे, जो हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का लाभ उठा कर इसमें प्रवेश कर गये।

आओ, हम सभी भारतीय मिल कर एक नया भारत बनायें! एक समृद्ध और खुशहाल नया भारत। एक विकसित नया भारत। एक शक्तिशाली नया भारत। हाँ, उसी भारत को जो दुनिया के भ्रष्टतम और दरिद्रतम देशों की पंक्ति में बैठा है। वही भारत जिसकी आधी से अधिक आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करती है- अर्थात जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं से वंचित है। वही भारत जिसने एक विद्रुप राजनीतिक व्यवस्था को आत्मसात कर रखा है। वही भारत जो इन दिनों तरह तरह की जुबान बोलने वाले ऐसे राजनेताओं का कर्म क्षेत्र बना हुआ है, जिनके लिए देश हित से बढ़ कर अपना राजनीतिक स्वार्थ है। और इसके लिए कुछ भी कर सकते हैं। पैसों के लिए अपना ज़मीर बेच सकते हैं। देश को गृह युद्ध में धकेलने का षड़यत्र रच सकते हैं। अपने राजनीतिक दुश्मन को परास्त करने के लिए देश के

दुश्मनों से हाथ मिला सकते हैं।

किन्तु हमें सपने देखने का अधिकार है, क्योंकि हम भारतीय उस ढेर पर बैठे हैं, जिसके नीचे अकूत सम्पदा दबी पड़ी है। हमारे पास अक्षय प्राकृतिक संसाधन है। विपुल मानव श्रम है। विश्व में अपनी मेधा और कुशाग्रता का परचम लहराने वाली युवा पीढ़ी है। प्रबन्धन में कौशल दिखाने वाले दुनिया के श्रेष्ठतम प्रबन्धक हैं। अश्वमेघ रथ पर सवार विश्व विजय को निकले असीम ऊर्जा के धनी उद्यमी हैं। हम अभावग्रस्त और समस्याग्रस्त नागरिक इसलिए हैं, क्योंकि विद्रुप राजनीति व्यवस्था हमारी क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रही है। सत्तर वर्ष पहले हमें नये भारत बनाने का सपना देखना था, किन्तु हमारे नसीब में तकलीफों के दुःस्वपन ही लिखे हैं। जिन्हें हमारी तकदीर बदलने की जिम्मेदारी सौंपी थी, उन्होंने अपनी तकदीर बदल ली और हम वहीं खड़े-खडे उनकी समृद्धि और खुशहाली को हसरत भरी नज़रों से देखते भर रह गये।

विकृत राजनीतिक व्यवस्था ने हमें दोराहे पर ला कर खड़ा कर दिया है। हमारे साथ दुविधा यह है कि हम किस रास्ते पर चलें? उसी रास्ते पर जिस पर हमारी राजनीतिक व्यवस्था ले जा रही है या हम मार्ग बदल दें। सत्तर साल की अवधि बहुत लम्बी होती है। राजनेताओं ने हमें नया मार्ग नहीं सुझाया, इसीलिए हम उसी राह पर चलते रहें। हमारी दशा रेगिस्तान के उस मृग की तरह हो गयी है, जो दूर कहीं चमकते रेत के धोरों को लबालब पानी से भरी झील समझ कर उस और दौड़ता है, पर जब हकीकत से रू-ब-रू होता है, तब हताश हो जाता है। यह मृगतृष्णा हमें छोड़नी होगी। हमें उन राजनेताओं का साथ छोड़ना होगा, जो सिवाय तकलीफों के कुछ नहीं दे पाये। ऐसा इसलिए हैं, क्योंकि हमारी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था हमें थोथे सपने दिखा कर हमारे साथ छल कर रही है। हमें आपस में बांटती है। एक दूसरे के प्रति हमारे मन में नफ़रत भरती है और इसी नफ़रत से अपने राजनीतिक स्वार्थ की रोटियाँ सेकती है। और हम राजनेताओं द्वारा बुने गये मकड़जाल में उलझ कर निरन्तर ठगे जा रहे हैं। हमें मालूम है-राजनीतिक व्यवस्था के समानान्तर में हम यदि नया मार्ग बनाने और उस पर आगे बढ़ने का निर्णय लेते हैं तो हमारे समक्ष कई व्यवधान उपस्थित किये जायेंगे, किन्तु व्यवधान उपस्थित करने वाले मुट्ठी भर लोग हैं, जबकि हमारे पास सवा सौ करोड़ नागरिकों का संख्याबल है। यदि हम एकजुट होंगे, हमारे पास नये मार्ग पर चलने का आत्मबल होगा, तो हमें कोई नहीं रोक पायेगा।

हमें व्यवस्था बदलनी है, इसलिए नये मार्ग पर चलने का निर्णय लेना होगा। व्यवस्था बदले बिना भारतीय राजनीति का शुद्धिकरण सम्भव नहीं है। राजनीति का शुद्धिकरण करने के पश्चात ही एक नये भारत का जन्म होगा। हमारे सपनो का

भारत। खुशहाल, समृद्ध, विकसित व शक्तिशाली भारत। हमारे समक्ष यक्ष प्रश्न यह है कि हम भारतीय नागरिक कैसे व्यवस्था परिवर्तन करें? नागरिकों को आपस में जोड़ने के लिए जनआंदोलन आवश्यक है और प्रबल जनआंदोलन से ही व्यवस्था परिवर्तन सम्भव है। पर जनआंदोलन की शुरूआत कहाँ से करें? केसे करें? किस व्यक्ति को इसके लिए अपना नेता स्वीकार करें? इन सारे प्रश्नों का उत्तर जानना बहुत आवश्यक है।

जन आंदोलन किसी बड़े शहर के एक भाग में आरम्भ नहीं होगा। यह आंदोलन पूरे देश में एक साथ प्रारम्भ होगा। जनआंदोलन स्वतःस्फूर्त होगा। अर्थात नेतृत्व विहिन होगा। सामूहिक नेतृत्व ही इसका मूल आधार होगा। व्यवस्था परिवर्तन के लिए हमारा जनआंदोलन अब गाँव की गलियों और शहरों के मोहल्लों से प्रारम्भ होगा। इस जन आंदोलन का उद्धेश्य हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को जीवंत बनाना है, उसे स्वस्थ और क्रियाशील बनाना है। अतः जनआंदोलन प्रारम्भ होने के बाद समाप्त नहीं होगा, क्योंकि आंदोलन का उद्देश्य सत्ता प्राप्ति नहीं, राजनीति का शुद्धिकरण करना है, जिसका सतत जारी रहना आवश्यक है।

यद्यपि जनआंदोलन का विस्तृत और व्यापक विश्लेषण आगे किया जा रहा है, किन्तु संक्षेप में इसका सारांश भी बताना भी आवश्यक है, क्योंकि इसी ध्येय को ले कर इस पुस्तक की रचना की गई हैः-

पूरे देश के जनमानस को आपस में जोड़ कर उनके मध्य संवाद स्थापित किया जायेगा। इस तरह जनता में लोकतंत्र के प्रति जागरुकता पैदा की जायेगी। यह जागरुकता उन्हें एक दूसरे से बाँधेगी। एक गाँव के सभी नागरिकों को आपस में बाँधेगी, फिर एक गाँव को दूसरे गाँव से जोड़ा जायेगा। इसी तरह एक ही मोहल्ले में रहने वाले सभी नागरिकों को आपस में जोड़ा जायेगा। शहर के सभी मोहल्लों को आपस में जोड़ कर एक शहर से दूसरे शहर के बीच संवाद स्थापित किया जायेगा। यह जन जागृति ही जनआंदोलन को जन्म देगी, जो पूरी तरह शांत रहेगा। इस आंदोलन को 'ठंड़ी-क्रांति' नाम दिया गया है। 'ठंडी-क्रांति' नामकरण इसलिए किया गया है, क्योंकि इसमें आग नहीं होगी, लपटे नहीं उठेगी। अर्थात धरना-अनशन नहीं होगा। किसी तरह का प्रदर्शन नहीं होगा। सत्ता प्रतिष्ठान को ललकारा नहीं जायेगा। आंदोलन की सफलता के बाद सत्ता में वे ही रहेंगे, जिन्हें जनता चाहेगी। परस्पर संवाद, सहयोग, समन्वय और सेवा ही इस क्रांति के मूलतत्व होंगे। इस जनआंदोलन में आग तो होगी, किन्तु वह दिखाई नहीं देगी। राख के नीचे दबे अंगारों में तप कर तपस्वी व्यक्तित्व बाहर आयेंगे, जो व्यवस्था परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक का काम करेंगे।

इस विषय पर गहन चिंतन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है

कि व्यवस्था बदलने के लिए किसी बड़े शहर से जनआंदोलन प्रारम्भ करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि राजनीति में प्रवेश करने वाले वे व्यक्ति जिनका किसी राजनीतिक दल में प्रवेश सम्भव नहीं है, ऐसे जनआंदोलन से जुड़ कर आंदोलन की गरिमा को नष्ट कर देते हैं। महानगरों में जहा न्यूज चैनलों और समाचार पत्रों के पत्रकारों का भारी जमावड़ा रहता है, जनआंदोलन प्रारम्भ करना ठीक नहीं रहेगा, क्योंकि आंदोलन का व्यापक प्रचार होने से इसके भटकने की सम्भावना रहती है। एक जन आंदोलन की ऊर्जा से राजनीतिक दल बना, भारत की राजनीति में जो तमाशा खड़ा किया, उसकी पुनरावृत्ति भी हम नहीं चाहते। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जनता का ऐसे आंदोलनों से अब मोह भंग हो गया है।

व्यवस्था परिवर्तन के लिये आरम्भ किये गये जनआंदोलन का ध्येय उन राजनेताओं को सार्वजनिक जीवन से निष्कासित करना है, जो राजनीति को पेशा समझते हैं, इसे धन कमाने का जरिया मानते हैं। उनके मन में सेवा भाव नहीं, वरन शासक बन कर संवैधानिक अधिकारों का अपने स्वार्थ के लिए दुरुपयोग करने की नीयत रहती है। नई व्यवस्था अपने बीच में से उन व्यक्तियों को खोजेगी, जिनका व्यक्तित्व तप और त्याग की अनूठी मिशाल होगा। उनके मन में राष्ट्र प्रेम कूट-कूट कर भरा होगा। सेवा, दया, करुणा का उनके मन में अनन्त भंड़ार होगा। वे ऐसे व्यक्ति होंगे, जो सेवा के बदले कुछ पाना नहीं चाहेंगे। अपना पूरा जीवन राष्ट्र को समर्पित करने के लिये प्रतिबद्ध होंगे। ऐसे व्यक्तियों को खोज कर उन्हें राजनीतिक व्यवस्था में स्थापित किया जा सकता है। यद्यपि एक सौ पच्चीस करोड़ नागरिकों में से कुछ हजार व्यक्तित्व दुर्लभ नहीं है, तथापि उन्हें व्यवस्था में स्थापित करना कठिन है। भारत के अधिकांश नागरिकों को आपस में जोड़ कर इस लक्ष्य को आसानी से हांसिल किया जा सकता है।

पूरा पढ़ने के लिए अपनी प्रति आज ही खरीदें।